ईश्वर हरभगवान चावला

ओ ईश्वर!
बहुत हुआ
अब नष्ट कर दो
दुनिया के तमाम पूजास्थल
तुम देखना
दुनिया बहुत सुखी हो जाएगी
और तुम भी।

ईश्वर-2
दिन-रात लाखों-लाखों
लोगों के द्वारा की जा रही
खुशामद भरी प्रार्थनाओं से
तुम ऊबते नहीं हो ?
ओ ईश्वर!
खुशामदियों को गूँगा कर दो
देखना, कितने मज़े में रहते हो
तुम।

ईश्वर-3
तुम अपने भक्तों की
दुआएँ क़ुबूल करते हो
उन्हें आशीर्वाद देते हो
अब बंद करो ये आशीर्वाद
तुम्हारे आशीर्वादों ने
संसार को नरक बना दिया है।

ईश्वर-4
ओ ईश्वर!
अपनी छतरी मुझे दे दो
मेरा वादा है
मैं उसे लपेटकर नहीं रखूँगा
तुम्हारी तरह
बल्कि दुनिया पर तान दूँगा
और बचाऊँगा उसे
धूप और बारिश से।

ईश्वर-5
बनी रहे पूजा की थाली
थाली में हल्दी, चंदन और
सिंदूर
बचे रहें जग में पान, फूल और
कपूर
सलामत रहे दियों में घी
बने रहें अभाव और वैभव एक
साथ
कि एक के उन्मूलन
और दूसरे की सलामती के
लिए
होती रहें सतत् प्रार्थनाएँ एक
साथ
सलामत रहे हाथों में स्पंदन
हृदय में वासना
और मनों में अनिष्ट का भय
ताकि सलामत रहो तुम
सदा के लिए ओ ईश्वर!

ईश्वर-6
राजाओं को बाँध बनाने थे
कारख़ाने लगाने थे
उन्हें सड़कें और नहरें बनानी
थीं
उन्हें सबके लिए रोटी जुटानी
थी
उनको बचाने थे पेड़-पौधे
वायु, जल और प्यार
पर तुम्हारे दूतों ने बनाए
भव्य पूजास्थल
भयावह अस्त्र-शस्त्र
वे लगातार बचाते रहे
मठाधीशों को
तुम्हें निर्बल जान ओ ईश्वर !
उन्होंने तुम्हारी रक्षा के लिए
विशाल सेनाएँ बनाईं
आश्चर्य है
इतने सारे रक्षकों के बीच
तुम अपने को अकेला पाते हो
और असहाय।

ईश्वर-7
धर्माचार्य फ़रमाते हैं
मोह माया से दूर रहो
और हर रोज़ बढ़ती जाती है
उनके मठों और डेरों की
सम्पत्ति
धर्माचार्य कहते हैं
झूठ है वह सब
जो तुम्हें दिखता है
सच वह है जो अदृश्य है
रिश्ते-नाते धोखा हैं
तुम्हारे दुश्मन हैं तुम्हारे बीवी-
बच्चे
तुम्हें इस जग में ईश्वर ने भेजा
है
तुम्हें जाना है ईश्वर के पास
दिन-रात उसी का नाम लो
एक बात बताओ ईश्वर
मैं आया हूँ तुम्हारे पास से
अंततः मुझे जाना है तुम्हारे
पास
फिर तुमने मुझे भेजा ही क्यों
अपने से दूर।

ईश्वर-8

हज़ार-हज़ार नामों वाला ईश्वर
लोगों को मरते-कटते देखता
था
देखता था और सुनता था
कि ईश्वर की मर्ज़ी के बिना
पत्ता तक नहीं हिलता
सुनता था और सोचता था
मैंने कब बताई थी इन्हें अपनी
मर्ज़ी
ईश्वर सोचता था और सिर
धुनता था
सिर धुनता था और
अपने किसी ईश्वर को याद
करता था

हुजूर पुलिस वाले रस्सी का साँप कैसे बना देते हैं

शिव कुमार झा

एक बार एक दरोगा जी का मुंह लगा नाई पूछ बैठा - "हुजूर पुलिस वाले रस्सी का साँप कैसे बना देते हैं ?"

दरोगा जी बात को टाल गए।

लेकिन नाई ने जब दो-तीन

बार यही सवाल पूछा तो दरोगा जी ने मन ही मन तय किया कि इस भूतनी वाले को बताना ही पड़ेगा कि रस्सी का साँप कैसे बनाते हैं !

लेकिन प्रत्यक्ष में नाई से बोले - "अगली बार आऊंगा तब बताऊंगा !"

इधर दरोगा जी के जाने के दो घंटे बाद ही 4 सिपाही नाई

की दुकान पर छापा मारने आ धमके - "मुखबिर से पक्की खबर मिली है, तू हथियार सप्लाई करता है। तलाशी लेनी है दूकान की !"

तलाशी शुरू हुई ...

एक सिपाही ने नजर बचाकर हड़प्पा की खुदाई से निकला जंग लगा हुआ असलहा छुपा दिया !

दूकान का सामान उलटने-पलटने के बाद एक सिपाही चिल्लाया - "ये रहा रिवाल्वर"

छापामारी अभियान की सफलता देख के नाई के होश उड़ गए- "अरे साहब मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता ।

आपके बड़े साहब भी मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं !"एक सिपाही हड़काते हुए बोला - "दरोगा जी का नाम लेकर बचना चाहता है ? साले सब कुछ बता दे कि तेरे गैंग में कौन-कौन है ... तेरा सरदार कौन है ... तूने कहाँ-कहाँ हथियार सप्लाई किये ... कितनी जगह लूट-पाट की ... तू अभी थाने चल !"

थाने में दरोगा साहेब को देखते ही नाई पैरों में गिर पड़ा- "साहब बचा लो ... मैंने कुछ नहीं किया!"

दरोगा ने नाई की तरफ देखा और फिर सिपाहियों से पूछा - "क्या हुआ ?"

सिपाही ने वही जंग लगा असलहा दरोगा के सामने पेश कर दिया - "सर जी मुखबिर से पता चला था .. इसका गैंग है और हथियार सप्लाई करता है.. इसकी दूकान से ही ये रिवाल्वर मिली है !"

दरोगा सिपाही से - "तुम जाओ मैं पूछ-ताछ करता हूँ !"

सिपाही के जाते ही दरोगा हमदर्दी से बोले - "ये क्या किया तूने ?"

नाई घिघियाया - "सरकार मुझे बचा लो...!"

दरोगा गंभीरता से बोला - "देख ये जो सिपाही हैं न ...साले एक नंबर के कमीने हैं ...मैंने अगर तुझे छोड़ दिया तो ये साले मेरी शिकायत ऊपर अफसर से कर देंगे ... इन कमीनो के मुंह में हड्डी डालनी ही पड़ेगी ...

मैं तुझे अपनी गारंटी पर दो घंटे का समय देता हूँ , जाकर किसी तरह बीस हजार का इंतजाम कर ..

पांच - पांच हजार चारों सिपाहियों को दे दूंगा तो साले मान जायेंगे !"

नाई रोता हुआ बोला - "हुजूर मैं गरीब आदमी बीस हजार कहाँ से लाऊंगा ?"

दरोगा डांटते हुए बोला - "तू मेरा अपना है इसलिए इतना सब कर रहा हूँ तेरी जगह कोई और होता तो तू अब तक जेल पहुँच गया होता ...जल्दी कर वरना बाद में मैं कोई मदद नहीं कर पाऊंगा !"

नाई रोता - कलपता घर गया ... अम्मा के कुछ चांदी के जेवर थे ...चौक में एक ज्वैलर्स के यहाँ सारे जेवर बेचकर किसी तरह बीस हजार लेकर थाने में पहुंचा और सहमते हुए बीस हजार रुपये दरोगा जी को थमा दिए ! दरोजा जी ने रुपयों को संभालते हुए पूछा - "कहाँ से लाया ये रुपया ?"

नाई ने ज्वैलर्स के यहाँ जेवर बेचने की बात बतायी तो दरोगा जी ने सिपाही से कहा - "जीप निकाल और नाई को हथकड़ी लगा के जीप में बैठा ले .. दबिश पे चलना है !"

पुलिस की जीप चौक में उसी ज्वैलर्स के यहाँ रुकी !

दरोगा और दो सिपाही ज्वैलर्स की दूकान के अन्दर पहुंचे ...

दरोगा ने पहुँचते ही ज्वैलर्स को रुआब में ले लिया - "चोरी का माल खरीदने का धंधा कब से कर रहे हो ?"

ज्वैलर्स सिटपिटाया-"नहीं दरोगा जी आपको किसी ने गलत जानकारी दी है!"

दरोगा ने डपटते हुए कहा - "चुप 999 बाहर देख जीप में हथकड़ी लगाए शातिर चोर बैठा है ... कई साल से पुलिस को इसकी तलाश थी ... इसने तेरे यहाँ जेवर बेचा है कि नहीं ? तू तो जेल जाएगा ही.. साथ ही दूकान का सारा माल भी जब्त होगा!"

ज्वैलर्स ने जैसे ही बाहर पुलिस जीप में हथकड़ी पहले नाई को देखा तो उसके होश उड़ गए, तुरंत हाथ जोड़ लिए - "दरोगा जी जरा मेरी बात सुन लीजिये!

कोने में ले जाकर मामला एक लाख में सेटल हुआ !

दरोगा ने एक लाख की गड्डी जेब में डाली और नाई ने जो गहने बेचे थे वो हासिल किये फिर ज्वैलर्स को वार्निंग दी- "तुम शरीफ आदमी हो और तुम्हारे खिलाफ पहला मामला था इसलिए छोड़ रहा हूँ ... आगे कोई शिकायत न मिले !"

इतना कहकर दरोगा जी और सिपाही जीप पर बैठ के रवाना हो गए !

थाने में दरोगा जी मुस्कुराते हुए पूछ रहे थे - "साले तेरे को समझ में आया रस्सी का सांप कैसे बनाते हैं !"

नाई सिर नवाते हुए बोला - "हाँ माई-बाप समझ गया !"

दरोगा हँसते हुए बोला - "भूतनी के ले संभाल अपनी अम्मा के गहने और एक हजार रुपया और जाते-जाते याद कर ले ... हम रस्सी का सांप ही नहीं बल्कि नेवला .. अजगर ... मगरमच्छ सब बनाते हैं .. बस असामी बढ़िया होना चाहिए"।

.....हमारे देश का कटु सत्य

कविता

कथनी औ करनी का अन्तर

-डॉ. रामवीर

कथनी औ करनी का अन्तर
बढ़ता ही जा रहा निरन्तर,
बड़े बड़े नेताओं का भी
हुआ निम्नतम नैतिक स्तर।

राजनीति में इधर हुआ है
धनिक वर्ग अतिशय ताकतवर,
और उधर बढ़ती जाती है
कृषक आत्महत्याओं की दर।

बाहुबली दबंग अपराधी
राजनीति में बना चुके घर,
थोड़ा सा जो बचा हुआ था
अब तो वह भी नहीं रहा डर।

जिनका कुछ न कभी बिगडता
ऐसे भ्रष्टाचारी अफसर,
उच्च पदों पर जमे हुए हैं
नेताओं के चरण दबा कर।

आम आदमी तो बेचारे
समझे जाते मक्खी मच्छर,
जब कि उनके ही वोटों से
नेता काबिज सिंहासन पर।

पांच साल में एक बार जब
चलता है चुनाव का चक्कर,
ग्रेट इंडियन सर्कस में तब
एक्टिव हो जाते हैं जोकर।

पता नहीं कब तक ये चलेगा
कब जागेगी जनता सो कर,
अब तो भारत का भविष्य है
जनता के जगने पर निर्भर।